Vol. 2, No. 2 (April 2013) P. 1-3
Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

कुछ संगीतकारों के ऑटोग्राफ और सम्बन्धित संस्मरण

आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव
अवकाश प्राप्त रीडर
संगीत एवं मंच कला विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
E mail: arohi629@gmail.com

नोटः– *इस लेख में हस्ताक्षर के स्थान पर अंग्रेज़ी भाषा का शब्द ऑटोग्राफ का प्रयोग किया गया है। लेखक की धारणा है कि मात्र हस्ताक्षर लिख देने से ऑटोग्राफ का भाव स्पष्ट नहीं होता।*
ऑटोग्राफ के सम्बन्ध में विकीपीडिया (WIKIPIDA) से निम्न जानकारी प्राप्त हुई है–

The word Autograph comes from Greek language. The Autograph is a document transcribed entirely in the hand writing of the author, as opposed to a typeset document.

The hobby of collecting Autograph is known as PHILOGRAPHY.

Collecting autograph may have started in sixteenth century, when Germen kept album of correspondence when they travel.

अर्थात्– ऑटोग्राफ ग्रीक भाषा का एक शब्द है जो पूर्ण रूप से उसके लेखक के हाथ से लिखा गया हो, न कि मशीन द्वारा। ऑटोग्राफ संग्रह करने के शौक को 'फिलोग्राफी' कहते हैं। ऑटोग्राफ संग्रह करने का प्रारम्भ सोलहवीं शताब्दी से प्रारम्भ हुआ होगा, जब जर्मन के यात्री पत्राचार का एलबम अपने साथ रखते थे।

लगभग बीसवीं शताब्दी के मध्य तक संगीतकारों या अपने चहेते कलाकारों का, उनके प्रशंसकों द्वारा हस्ताक्षर (Autograph-ऑटोग्राफ) लेने का खूब चलन था। उस समय किसी कार्यक्रम के समाप्त होते ही युवक/युवतियों का हुजूम कलाकार को घेर लेता था और उनका हस्ताक्षर अपने ऑटोग्राफ बुक में या किसी कागज़ में ले लेता था। वे उस कलाकार से मिलने की याद में उसे वर्षों तक सुरक्षित रखते थे। संयोग से इन पंक्तियों के लेखक को भी संगीतकारों का ऑटोग्राफ लेने का शौक था। उस बीच कुछ कलाकारों से कुछ रोचक अनुभव भी हुए हैं। उसकी यह इच्छा है कि वह अपने संस्मरण को अपने पाठकों के साथ बाँटे। उसी प्रयास में यह संस्मरणात्मक लेख प्रस्तुत है। यूँ तो लेखक के पास बहुत से संगीतज्ञों के ऑटोग्राफ सुरक्षित हैं, परन्तु यहाँ पर केवल उनकी ही चर्चा की जा रही है, जिनके साथ कुछ विशेष स्मृतियाँ जुड़ी हुई हैं।

1. इस क्रम में पहला नाम उस्ताद अहमद जान थिरकवा का आता है। आप तबले पर स्वतन्त्र–वादन के लिए आज भी याद किये जाते हैं। आकाशवाणी के इलाहाबाद केन्द्र द्वारा आयोजित एक संगीत सभा में खाँ साहब आमन्त्रित थे। संयोग से आप लेखक के गुरु प्रो0 लालजी श्रीवास्तव के अतिथि रहे। अतः लेखक को भी आपकी सेवा करने और निकट से जानने का अवसर मिला। खाँ साहब कई बार तबला लेकर बैठे भी, परन्तु जब भी मैंने ऑटोग्राफ के लिए प्रयत्न किया तो आप उसे टाल जाते थे। जिस दिन आपका कार्यक्रम आकाशवाणी में था, उस दिन मैं उनके साथ लग लिया। कार्यक्रम के बाद जब चेक लेने की बारी आई तो आपने ड्यूटी ऑफीसर से स्याहीवाला पैड मँगवाया। खाँ साहब ने अपना अंगूठा उसमें रंगा और आकाशवाणी के पेपर पर अंकित कर दिया। मैंने उस अवसर का लाभ उठाया और अपना ऑटोग्राफ बुक भी आगे रख दिया। खाँ साहब ने प्यार से मेरे सिर पर एक चपत लगाया और कहा, ''बेटे! मुझे लिखना नहीं आता।'' इस बात को 50 वर्षों से भी अधिक हो चुके हैं, परन्तु आज भी वह चिन्ह लेखक के पास सुरक्षित है।

2. वाराणसी के बीते दिनों के प्रसिद्ध ताबलिक पं0 अनोखे लाल जी को उनके 'धिरधिर' और 'ना धिं धिं ना' वादन के लिए आज भी याद किया जाता है। मैंने जब आपका ऑटोग्राफ लिया तो आपने ''दः नोखे लाल'' लिख दिया। जब मैंने अनोखेलाल के स्थान पर नोखेलाल लिखने का कारण पूछा तो यह सुनकर आप मुस्कुराए और बनारसी भाषा में सहज होकर बोले ''देखा बेटा– एक अक्षर लिखे से बच गइली'' अर्थात् एक अक्षर लिखने से बच गए। ऐसे थे पण्डित जी।

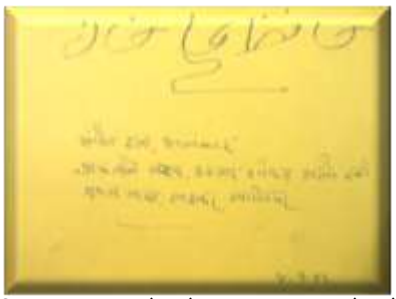

3. इसी क्रम में ग्वालियर के मशहूर सरोद–वादक उस्ताद हाफिज़ अली ख़ाँ की भी चर्चा करना चाहुँगा। 50 के दशक में उस्ताद, प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद द्वारा आयोजित एक संगीत सम्मेलन में भाग लेने के लिए पधारे। हमारे जैसे और तीन लड़के और थे जो खाँ साहब के ऑटोग्राफ के इच्छुक थे। खाँ साहब ऑटोग्राफ के लिए राजी हो गए और पूछा कि क्या तुम लोग पढ़ना–लिखना जानते हो ? यह जानने के बाद हम सभी को बैठने के लिए कहा और बोले जो मैं कहता हूँ उसे लिखो और पढ़कर सुनाओ, तब मैं दस्तख़त करुँगा। बोले लिखो ''उस्ताद हाफिज़ अली खाँ, आफ़ताब–ए सरोद, मध्य भारत, लश्कर ग्वालियर''। हम सभी से बारी–बारी पढ़ने को कहा तब कहीं ऑटोग्राफ बुक पर दस्तख़त किया।

4. संगीत की दुनियाँ में सितार–वादक स्व0 पं0 निखिल बनर्जी का नाम आज भी श्रद्धा से लिया जाता है। पण्डित जी से मैंने ऑटोग्राफ के लिए आग्रह किया तो आपने मेरा ऑटोग्राफ बुक ले लिया और दूसरे दिन वापस किया। उसमें अपने ऑटोग्राफ के साथ लिखा था, "To meet, to know, to love and then to part, is the sad tale of many a human heart" अर्थात् किसी से मिलना, उसे जानना, उससे प्यार हो जाना और उसके बाद उससे बिछुड़ जाना, बहुत से लोगों की दर्दभरी दास्तान है।

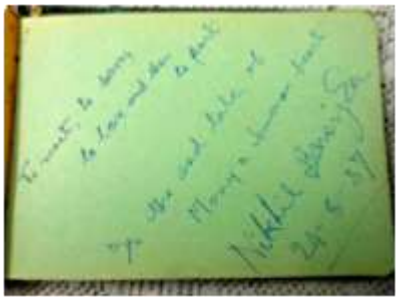

5. किसी समय मेरठ (उत्तर प्रदेश) के मशहूर ताबलिक उ0 हबीबुद्दीन खाँ का बड़ा नाम था। आपको संगत–सम्राट की उपाधि मिली थी। इलाहाबाद में संगीत के एक आयोजन में आपसे ऑटोग्राफ लेने का मौका मिला। बड़ी मुशकिल से आप उर्दू में अपना नाम लिख पाए। किसी ने प्रश्न किया कि उस्ताद जब आप इतनी मुश्किल से अपना नाम लिख पाते हैं तो तबले की इतनी सारी बन्दिशों को कैसे लिखते होंगे ? इस पर खाँ साहब बोले कि मेरे उस्ताद जो कुछ सिखलाते हैं, उस पर मैं इतना रियाज़ करता हूँ कि वह मेरे शरीर में घुल–मिल जाता है और मैं कभी नहीं भूलता।

6. वाराणसी के अन्य ताबलिक पद्म भूषण पं0 सामता प्रसाद का उपनाम गुदई महाराज था। अपने ऑटोग्राफ में आप कभी सामता प्रसाद, कभी गुदई महाराज और कभी–कभार साथ में जय माँ काली भी लिख दिया करते थे।

7. इस यात्रा में कुछ कड़वी यादें भी हैं। विख्यात गायिका हीराबाई बड़ोदेकर ने बहुत बेमन और झल्लाकर केवल हिराबाई लिखकर ऑटोग्राफ बुक दे दिया था।

आजकल तो ऑटोग्राफ की प्रथा लगभग समाप्त हो चुकी है, अब शेष हैं केवल वे स्मृतियाँ जो उन कलाकारों से जुड़ी हुई हैं।